नई पीढी के समर्थ कथाकार और उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली का नाम समकालीन रचनाकारों में अपरिचित नहीं है। आपने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन किया हैं। आपने कहानी-उपन्यास लेखन में ख्याति अर्जित की हैं। बचपन से ही कठीन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने कथा साहित्य में मध्यवर्गिय जीवन की विडम्बनाओं का चित्रण अत्यन्त खुलेपन से किया हैं। कोहली जी स्वातंत्र्योत्तर काल के हिन्दी के सुपरिचित कहानीकार हैं।

नरेन्द्र कोहली की कहानियों पर शोधकार्य करने की प्रेरणा मुझे मिली जब मैंने आपकी "परिणति" यह कहानी पढ़ी। स्वातंत्र्योत्तर भारत के मध्यमवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रांकन इनके साहित्य में मुझे नजर आया। उनकी कहानियों ने मुझे अत्याधिक प्रभावित किया। फलस्वरूप मैंने कोहली जी के कहानियों का अनुशीलन करने का दृढ़ संकल्प किया। इस लघु शोध-प्रबंध के सहारे यह संकल्प साकार हुआ।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न थे....

1) नरेन्द्र कोहली जी की कहानियों की विशेषताएँ क्या है?

2) आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में नरेन्द्र कोहली का स्थान?

3) नरेन्द्र कोहली की कहानियों में चित्रित समस्याएँ?

नरेन्द्र कोहली के कहानियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन करते समय मैंने उपरोक्त सवालों का हल ढूँढने का प्रयास किया हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध चार अध्यायों में विभाजित हैं -

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में नरेन्द्र कोहली का जीवन परिचय दिया है। साथ ही साथ उनके कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया हैं। इस अध्याय में नरेन्द्र कोहली के जन्म से लेकर आज तक के जीवन क्रम का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया हैं। उनके व्यक्तित्व निर्माण में घर, परिवार, पिता, पत्नी आदि का भी योगदान रहा है। उसे भी इसमें देखा गया है। उनके साहित्यिक कृतित्व पर सरसरी नजर डाली हैं।

द्वितीय अध्याय में कोहली जी की कहानियों का विकासात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया हैं। इस अध्याय में उनकी सभी प्रकाशित कहानी संग्रहों का सामान्य परिचय दिया हैं। साथ ही उनके कहानियों की विशेषताएँ देखी हैं।

तृतीय अध्याय में इस शोध-प्रबन्ध की जान हैं। इसमें कोहली जी के कहानियों में चित्रित समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया हैं। कोहली जी की कहानियों में चित्रित सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं का मूल्यांकन किया हे।

चतुर्थ अध्याय में नरेन्द्र कोहली की कहानियों की विशेषताएँ और उपसंहार हे। उपसंहार में प्रबंध के विषय का सार रूप है। कोहली जी के कहानियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन करने के पश्चात जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार के रूप में देने का प्रयास किया हैं।

प्रबंध के अंत में परिशिष्ट दिया हैं। परिशिष्ट के पुर्वार्ध में नरेन्द्र कोहली जी की रचनाओं की सूची दी हैं। परिशिष्ट के उत्तरार्ध में सहाय्यक संदर्भ ग्रंथों की सूची दी हैं। साथ में प्रत्येक ग्रंथ के प्रकाशक एवं संस्करण दिया हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहाय्यता करनेवाले तथा समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करनेवाले मेरे श्रध्देय, गुरूजन, हितचिंतकों एवं आत्मीय मित्रों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मैं अपना आदय कर्तव्य समझती हूँ।

कृतज्ञता ज्ञापन :

लघु-शोध कार्य का संकल्प श्रध्देय गुरूवर्य डॉ. के.पी. शहा जी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल हैं। आपके सहयोग के बिना यह कार्य कैसे सम्पन्न होता? "गुरूबीन कौन बतावे राह।" आपने प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के शीर्षक के चुनाव से लेकर अन्त तक महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजुद आपने इस लघु-शोध-प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय देखा और मुझे निरन्तर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम हे। आपके इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए असंभव हैं। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद की मैं निरन्तर कृपाभिलाषी रहूँगी।

आदरणीय डॉ. पी.एस. पाटील, डॉ. वसंत मोरे, डॉ. व्ही.व्ही. द्रविडे, डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. बी.बी. पाटील, डॉ. सौ. जैन, प्रो. मिस रजनी भागवत, प्रा. वेदपाठक, प्रा. तिवले, प्रा. मुजावर, प्रा. कणबरकर, प्रा. हिरेमठ, प्रा. सौ. जाधव, प्रा. सौ. पार्डेळकर का आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा हैं। उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे पुज्यवर माता-पिता जिनके सहयोग के बिना यह शोध-कार्य असंभव था, वे मेरे भैया ॲड. यासीन, राजू और बहना ॲड. जुबेदा, प्रा. फमिदा और मेरे जीजा प्रा. शब्बीर बिजापुरे इन सब की मैं हार्दिक ऋणी रहूँगी। आपने मुझे इस सफलता की उँची चोटीपर पहुँचाया। मेरी दादी शहापरी आपका भी इस कार्य में बड़ा सहयोग हैं।

डॉ. मोहन जाधव जी ने सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद इस लघु शोध-प्रबन्ध के प्रत्येक अध्याय को जाँचा। आपके इस कार्य की मैं निरंतर ऋणी रहूँगी। प्रा. भारत खिलारे, प्रा. विजय माने, प्रा. मारूफ मुजावर, प्रा. सुनिल बनसोडे, प्रा. कंगले, श्री कुचेकर इनके परोक्ष सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हो गया। इनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

मित्रवर कु. रत्ना, सुलक्षणा, संगिता, सविता, राजश्री, परवीन इन्होंने भी मुझे दिनो-दिन अपने कार्य में बने रहने के स्नेह एवं सद्भावपूर्ण सुझाव देकर अपनी मित्रता की प्रामाणिकता सिध्द कर दी हैं। उसके प्रति मैं कृतज्ञ ज्ञापित करती हूँ। "शिवाजी विश्वविद्यालय" के ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति आभारी हूँ।

इस प्रकार प्रबन्ध को यथाशक्ति परिपूर्ण बनाने का मैंने प्रयास किया है, इससे विद्वज्जनों को यदि थोड़ा भी परितोष हुआ तो मैं अपने इस शोध-कार्य को सार्थक समझूँगी।

अंत में इस शोध-प्रबन्ध को अति शीघ्र एवं सुचारू रूप से टंकलिखित रूप देने का काम कराड की श्रीमती ज्योती नांदेडकर ने किया, उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ। इसके साथ मैं अपना यह लघु-शोध प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखती हूँ।

Shirins. A
आपकी कृपाभिलाषी,

सुरैया शेख
शोध-छात्रा

कोल्हापुर

दिनांक : 29/12/1994

०००